॥ श्रीमन् दीनानाथायनमः ॥

अथ

कीर्ति किरण प्रारंभः

★ वंदना—

दोहा

श्री गुरुराज प्रणाम है । चरणन बारम्बार ॥
कीर्ति हेत गुनगान शुभ । होय सर्व हितकार ॥

समर्पण—

सवैय्या

भगवान प्रणाम करूँ कर जोर सहायक आपहिं तो सुख दइया ॥१॥
कौन सक्यो महिमा को बखान अनंत चरित्र तुम्हार कन्हइया ॥२॥
आपन बुद्धि नुसार यथा गुन गान करैं जन मोद देवइया ॥३॥
...र्ति किरण स्वीकार करो गुन गाअन चाह नहीं चतुरइया ॥४॥

दोहा

हे प्रभु दीनानाथ जी । लीला अपरम्पार ॥
कथन शक्ति कछु है नहीं । कीर्ति किरण स्वीकार ॥

ॐ

अथ कीर्ति किरण प्रारंभः

सीनः—पहिला । **ड्राप पहिला** स्थानः—श्रीराधिका महल ।

★ समाजी वं० =

दोहा

श्री महरानी राधिका । कृष्ण प्रमोद अथाह ॥
नित्य नई लीला ललित । दम्पति प्रेम उमाह ॥

वार्ता :—श्री महारानी राधिका जी सखियों से प्रियतम के गुण गान कर आनंदित हैं। (अरी चन्द्रानने) देख प्राणनाथ मोहन प्यारे की कैसी अनूपम लीलायें हैं। जाके गानध्यान किये हूं विलग रहनो भी सहन हो जात है। (चन्द्रानना हाँथ जोड़ कर) हाँ महारानी जी। वह अपूर्व अमी हुई है।

★ समाजी व०—

सीन :—दूसरा। **दोहा** स्थान :—वृषभान वाटिका।

पुष्प लेन चित्रा सखी । गई विपिन प्रिय हेत ॥
अति सुन्दर वीणा मधुर । स्वर सुनि आहट लेत ॥
देखी अनुपम छबिमयी । वीणा धारिनि नार ॥
नव किशोर मन हारिनी । सुन्दर सर्व सिंगार ॥

वार्ता :—चित्रा सखी पुष्प लेने वाटिका जाती है। वहाँ जाकर मनोहर बँगले पर वीणा की मधुर आवाज सुनाई देती है। स्वर का अंदाज लगा कर वीणा बजाने वाले की टोह में जाती है। और पास पहुँच सुर महा सलोनी शोभाधारिणी वीणा अंक में लिये बजाती हुई एक सुन्दरी को देख, मुग्ध हो निमिष भूल कर निहारती है।

सवैय्या

ढिग जाय विलोकि अनूप छटा बिकि गै बिन मोल खड़ी चुप आली ॥१॥
कीन सम्हार कछू क्षण में गमनो प्रिय देन सँदेस उताली ॥२॥
जाय समीप अचंभित देखि भयो यह काह पूछ रहीं आली ॥३॥
काह कहूँ वृषभान कि बाग लखी यक कीर्ति वीणा स्वर वाली ॥४॥

वार्ताः—चित्रा अचंभित आतुर आती है और महारानी जू पै बताइवे को जाती है। राधा जी की समीपी सखियाँ पूछती हैं। अरी चित्रा तूँ तो पुष्प लेवे गई ही, फिर क्यों बिना पुष्प लिये ही उतावली लौट आई। अरी—तुझे कहा भयो है? तेरो तो गूँगे को स्वपनो सरीखो हाल है। कछू पर्‍यों पायो है क्या, जो मन मस्की जा रही है। (*चित्रा*) हाँ वीर यही हाल है। चल प्यारी पै सुन ले। (*महारानी के समीप चित्रा और हाल बूझवे वाली सखियाँ आती हैं*)। (*चित्रा*) महारानी राधा जी से हाँथ जोड़ कर कहती है। हे प्रिये जी—मैं पुष्प लेने आपके बागीचे गई थी, परंतु फूल न ला सकी। क्योंकि बँगले पर कालिंदी की छटा देखती हुई एक महा सलोनी नील मणि वर्ण वाली वीणा वजा रही है। मैं निकट जा कर देख आई हूँ।

★ *चित्रा व०—*

दोहा

वीणा कर धारे मधुर। राग अलाप विशाल॥
अंग अंग शोभा भरी। विपिन लखी यहि काल॥

वार्ताः—वाको देख कर मेरो मन हाँथ से जातो सो व्है रह्यो है। और सुनो—

शेरी

नहीं रूप यौवन को ऐसा कोई॥
चलो तो प्रिया जी देखाऊँ सोई॥

वार्ताः—ऐ ईश्वरी—चलो तो मैं तुम्हें दिखा दूँ। ऐसी रूप रंग वाली नव यौवना सुन्दरी मैंने कहीं ना देखी ना सुनी है। कालिंदी की तरँगैं हूँ, वह वीणा स्वर अलाप सुने ठहरा जाती हैं। मैं कहाँ तक बखानूँगी, आप स्वयम् चल कर देखें तो सही (*महारानी कहती हैं*) अरी चित्रा—याही सो चित्र सी एक मन वाली हो रही है। अच्छो चल मैं चलूँ हूँ।

★ *समाजी व०—*

शैरी

सुनी बात राधा चलीं आतुरी ॥ कही चल दिखा वह अली चातुरी ॥
चली संग प्रिय के अनेकों अली ॥ लखैं कब कहैं मन छबीली अली ॥

वार्ताः—प्यारी सखियों के साथ बागीचे जाती हैं। मन में छबीली सुन्दरी के विलोकन की आतुरता है। जलदी हीं बागीचे पहुँच जाती हैं।

शैरी—समाजी व०—

गईं राधिके स्वर सुनाई परा ॥
बड़ी हीं मृदुलता अमीं रस भरा ॥
निकट जाय देखी अनोखी छटा ॥
छबीली के मुखड़े पै कुंतल घटा ॥
चली प्यारी आतुर चरन लटपटा ॥
सलोनी की सूरत में मन है सटा ॥

विलोकी भली भाँति प्यारी तिसे ॥

कही कौन उपमा भला दें इसे ॥

वार्ता :—प्यारी वीणा के मीठे २ स्वर सुन कर, शीघ्र गमन कर निकट आ जाती हैं। वीणा वारी की भारी छवि पै लुभा कर मन हीं मन कहती हैं। अहा—या सुन्दरी की उपमा हीं नहीं है। क्या उपमा दूं ? (*सखियों से*) अरी—देखो तो, याको अद्भुत सुहावनो रूप है। गर्दन झुकी है, कुटीले केशो ने मनहारिनी के मुख को घेर लियो है। क्यों, है न ठीक ? (*ललिता*) हाँ महारानी मेंघ झुक कर जल बर्साते हैं, और यह कुन्त अमृत रूपी दरस बरसाते हैं। भावनी सूरत से आँखें अलग हीं नहीं होती। चलिये—समीप आसीन होकर याकी पहिचान कर, अच्छी २ तानें सुनिये। यही विनय है। (*प्यारी*) अच्छो चलो। (पास जाकर बैठ जाती हैं)

★ *समाजी व०—*

शैरी

कहीं वीणा वारी अकिल की बड़ी ॥

दोऊ की निगाहें परस्पर लड़ी ॥

वार्ता:—(*प्यारी जी*) भले आई हो वीणा वारी। तुम्हारो यौवन, बुद्धि, गान, सबहीं तो बड़ो है। (*साँवरी वीणा वारी की निगाह प्यारी पै गई। चार आँखों की हालत बिगड़ गई। वीणा वारी, प्यारी पै वलिहारी मन ही मन होती है। और प्यारी जी साँवली सलोनी पर निगा मिलते हीं तड़फ जाती हैं। मन हीं मन प्यार करती है*)

★ *प्रियाजी का व०—*

दोहा

कौन अहो काकी प्रिया । कौन पिता को मात ॥
वास कहाँ समझाइये । वीणा वारी बात ॥

वार्ता :—प्रिया और समीप जाकर पूँछती हैं । ऐ सलोनी—तेरो ग्राम कहाँ है ? और पति, पिता, माता कौन हैं ? तुम कौन हो आनो कहाँ से है ? मैं जानबे को उत्सुक हूँ बता दो ।

★ *वीणावारी व०—*

दोहा

कोई हूँ क्या काम है । मात पिता पति छान ॥
आई तेरे बाग में । जानि सुखद अस्थान ॥

वार्ता:—ऐ प्यारी—हमारे माता पिता पति को पूँछ कर कहा करोगी । मैं कोई हूँ तुम्हें क्या परी है । श्रमित थी यासे तेरे बाग में आकर विश्राम ले रही हूँ । स्वस्थ चित्त हो जाने पर याँसे भी चली जाऊँगी । तेरी बातें हमें नीकी नहीं लगी । नाम ग्राम पूँछबे की गर्ज छोड़ दो । नहीं मैं चली जाऊँगी । तुम्हें हमारी छान सूँ कहा मतलब है ?

★ *समाजी व०—*

दोहा

प्रियम्वदा बोली अरी। प्यारी पै मत खीझ ॥
याके मन तूँ भावती। ताही ते की बूझ ॥

वर्ता:—प्रियंवदा कहती है। ऐ सलोनी—प्यारी जी को कछु ना कहो। अरी यह (इसारे से) तुम्हें जी से चाह रही हैं। लाड़िली की इच्छा राखिवो बुद्धिमानी है।

★ *प्रियाजी व०—*

शैरी

भले आई आया करो रोज हीं ॥
तिहारी सी आली न देखी कहीं ॥
यही तो मैं पूँ छूँ कहाँ को चली ॥
अरी वीणा वारी तु लागे भली ॥
हमें हूँ सुनावो मधुर वीणा गान ॥
मेरो जी चहे तोकूँ निश्चैं लो मान ॥

वार्ता:—अरी मोहनी बीणा वारी—याही से तो मैं तुम्हें चाहती हूँ। जो कि तुम अति चातुरी हो मेरी बूझनो याही से मानो। तेरी मर्जी हो रोज आयवे करो। बाग में रहो, जो भावे याहीं रहो। हमें वीणा बजाकर गान सुनाइये। हम सुनबे कूँ चाह रही हैं।

★ *समाजी व०—*

शैरी

हँसी वीणाधारी कही आवो पास ॥ सुनाऊँगी गानों समझ तेरी आस ॥

वार्ता:—वीणाधारी कहती है। अरी प्यारी आवो, मेरे पास बैठो। तुम्हारी इच्छा जान कर मैं वीण वजा कर गाऊँ हूँ।

★ *वीणाधारी व०—*

गाना ठुमरी

साँचो तो सर्व सार एक कृष्ण नाम है।
जग काँच साँच इष्ट हरी आठो याम है ॥१॥
रट श्याम श्याम श्याम हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण।
तुहीं तो परम आतमा परिपूर्ण काम है ॥२॥
जग जन्म मानवीहुँ पाय मुक्त न भया।
कल्याण कै सका न अकृति करि वेकाम है ॥३॥
भव पार हाँथ मुक्ती गिरधर गोपाल के।
ता हेत श्रीगोविंद गान कीर्ति काम है ॥४॥

★ *समाजी व०—*

शैरी

वजा वीणा गाई मधुर गान बाल। गई मोहि प्यारी दई मोती माल ॥

वार्ता :—महारानी राधा जी प्रसन्न हो जाती हैं। मोतियों का हार देती हैं। (सखियाँ) वाह वाह अच्छो गायो है। प्यारी वीणावारी पै मुग्ध हो जाती हैं।

★ *प्रियाजी व०—*

गाना

तेरो वीणा वारी गानो मेरे मन भाई है ॥
विद्या गुण आगरी हो रूप की निकाई है ॥१॥
सारो गुण प्रगट दिखावो सकुचावो नहीं ॥
सुख सरसावो आली भले इत आई है ॥२॥
बसो बरसाने चलो भवन हमारे साथ ॥
रोजी आनो जानो तेरो मोकूँ दुखदाई है ॥३॥
बोलो तो चलो की नाहीं मो पै साँची साँची कहो ॥
छबि नीकी तेरी कीर्ति जिया में समाई है ॥४॥

वार्ता :—अरी सलोनी वीणावारी, तिहारो गानो अति हीं भायो है। तुम हमारे साथ महल चलो। रोज को आनो जानो ठीक नहीं। तुम्हें भवन में ही राखूँगी। बोलो—क्या इच्छा है ? मैं अब भवन जाऊँगी।

★ समाजी व०—

दोहा

वीणा धरि महि तुरतहीं । भौं मड़ोर चुप साधि ॥
फिरी पीठ दै अनमनी । कह ललिता कह ब्याधि ॥

वार्ता:—महारानी प्रिया जी का वचन सुनकर, वीणावारी सजनी वीण जमी पर रख कर और प्रिया की तरफ पीठ देकर, आँख भौं मटका कर, मलीन मुख करके बैठ जाती है।

★ ललिता व०—

दोहा

री वीणा वारी अली । कौन भयो दुख तोहिं ॥
अबहीं तो नीकी रही । समझ पड़त नहिं मोहिं ॥

वार्ता:—(ललिता) अरी सजनी—अभी तो तूँ भली थी। बीण बजाई, गाई, हँसी खुशी में मगन रही। अब इक क्षण में हीं तोकूँ कौन सी व्याधि दुखी कर दीनी। कह तो सही।

★ वीणावारी व०—

शैरी

हम जाँय वाँयगी नहीं टिकबे विराने भौन ॥

गुन की खदान है मेरे पर घर न ताते गौन ।।
अपमान भौन वास से होवेगा री सखी ।।
सहि जायगो नहीं सुनो ताही ते हौं मखी ।।
सुन कान खोल बोल नाहिं तो मैं जाऊँगी ।।
वस के समीप रोजना सनमान पाऊँगी ।।

वार्ता:—अरी सखी—हम भौन में जायँगी ही नहीं । विराने घर में रोज रहने से अपमान कौन सहेगो ? (हाँथ उठा कर) यह लड़िली हमें साथ ले जानो चाहती है । क्या ये ठीक है ? नहीं, नहीं, मैं न जा सकूँगी । मेरो मन याही से दुखी हो गयो है । और आजार कछू नहीं भयो । तू कान खोल कर सुन ले । मेरे, भौन में जाइवे की इच्छा नहीं है । क्योंकि मैं गुणवती हूँ । हमें कछू की गरज नहीं है ।

★ *प्रियंवदा और ललिता व०—*

दोहा

अहो गुणीली भ्रम तजो । आदर नित नव होय ।।
गुण ग्राहक प्यारी मेरी । दुक्ख करहु जनि कोय ।।
चलहु भवन मन भावनी । समझदार प्रिय जान ।।
याको मन रखिवो उचित । बुद्धिमती सच मान ।।

वार्ता :—अरी गुनीली—भ्रम को छोड़कर, प्यारी जी को कहनो मान कर, भवन को गमन करो। क्योंकि जो आदर से चाहे, वाकी चाह को मान देनो चाहिये। प्रिया जी गुनियों की कदर करने वाली हैं। याते आनंद से चलो। तुम तो स्वयम् बुद्धिमती हो।

★ *समाजी व०—*

दोहा

सुचित प्रसन्न भईं तबै। वीणा वारी वाम॥
निपट समझवारी अली। निश्चय गमनहुँ धाम॥

वार्ता :—वीणावारी कहती हैं। अरी सखी तू चतुर है। मैं अब भवन जरूर चलूँगी।

वीणावारी व०—

शैरी

सहेली चतुरता तेरी नीक है। चलूँ सँग तेरे कही ठीक है॥
नहीं राज दुहिता कछ बोलती। चलूँ या कि नाहीं यही सोचती॥

वार्ता :—अरी सखी तू तो भली है ही। परंतु ये (*हाँथ के इशारे से बता कर*) राजदुलारी तो कछु बोलती ही नहीं है। याते जाऊँ या न जाऊँ यही सोचती हूँ।

★ प्रिया व०

शैरी

गुणीली सुनो न्याव की क्या चली । रमै जी तो रहियो ये बातें भली ॥
जो मनहीं न होवै तो जावो अली । नहीं तो चलो भौन याही भली ॥

वार्ताः—अरी सजनीं—यामे न्याव ही क्या है जो पटाया जावे । तुम्हारो जी चाहै तो मेरे साथ भवन चलो । नहीं तो फिर जावो । यही तो बात है ।

★ समाजी व०—

शैरी

उठी वीणा वारी सुघर चातुरी ॥ चलो भौन राधे हुँ मैं आतुरी ॥
चली श्रीप्रिया हाँथ में हाँथ मेल ॥ खुशी वीणा वारी करी सङ्ग हेल ॥

वार्ताः—वीणावारी आतुर होकर कहती हैं । ऐ राधे—चलो मैं चलती हूँ ।
(दूनो राधे और सजनी हाँथ में हाँथ मिलाये चलती हैं । सखियाँ [illegible] में हँसती बतराती जाती हैं । प्यारी और सजनी स्नेहभरी बातें करती हैं)

सीनः—पहिला । **ड्राप दूसरा** स्थानः—रास्ता ।

★ समाजी और वीणावारी व०—

शैरी

चली थोड़ दूरी कही ऐ प्रिया । पड़े छाल पैरों में हा दुख दिया ॥

सवारी बिना मोहिं लाई इतै। बता तो महल अब तेरो है कितै ॥
श्रमित हूँ नहीं मोपै जातो चल्यो। भलो साथ तेरो प्रिया जी मिल्यो ॥

वार्ता :—अरी प्यारी मेरे तो पाव थक गये अब मोपै चल्यो हीं नहीं जावे है। अच्छो त्यारो साथ मिल्यो। कछु चढ़वे को नहीं दियो, याते मोकूँ दुख भयो है।

★ *प्रिया व०—*

शैरी

कही राधिके वीर तूँ उठ चली। मैं हूँ संग लागी सहेली चली ॥
वहीं पर जो जाहिर किये होती बात। चढ़ा यान लाती नहीं पग पिरात ॥

वार्ता :—अरी सजनी—तूँ आतुरता से चल दीनी। तब मैं और सखियाँ हूँ चलीं। वाहीं कहनो था। पैदर नहीं आनो था। तब तो मैं अच्छो यान मँगा कर चढ़ा कर ले जाती। अब तो चलनो हीं पड़ेगो (*सब सखियाँ*) हाँ वीणावारी थोड़ी हीं दूर पर भवन है. चली चलो। (*हँसती हैं*) (*कहती हैं*) पांव दबा दूँगी।

वीणावारी वचन—

शैरी

तो प्यारी अब तो यही ठीक है ॥ भवन मैंने जाना की नजदीक है ॥

वार्ता :—प्यारी मैं नहीं समझी थी कि तिहारो भौन दूर होयगो।

शैरी

चलो हो चुकी बात जो होनी थी। हुँ आई जु बरसाने की ठीक थी ॥

वार्ताः—बरसानो है ना। याते पैदल ही चलनो ठीक है। जो हो चुकी वही बातों को कहा कहतो रहै। चलो जो पूँछू बताती चलो।

सीनः—दूसरा। **समाजी व०** *स्थानः—श्रीराधिका महल।*

दोहा

पूँछत गोपिन के सदन। गहे प्रिया कर हाथ ॥
प्रति प्रति व्योरो भवन करि। कहत अली सुख साथ ॥
याही पूँछत चतुर वह। आई प्रिया निवास ॥
अति आदर करि मन मुदित। राखी सजनी पास ॥

वार्ताः—(*वीणावारी*) अरी—हमें अपने भौन बताती चलो। (*चन्द्रावलि उँगली से बता बता कर*) देखो आली—ये घर ललिता को है, और मेरो। ये विसाखा, चन्द्रानना को है। और ये ये घर जो दीखैं हैं सा सहेलियों के हैं। श्री वृषभान नगर की भारी बस्ती और शोभा है। कभी तुम्हें घुमाकर दिखा लाऊँगी। (*वीणावारी*) अच्छो सखी कभी और कूँ चलेंगी। (*योंही बतराती प्यारी जी के निवासस्थान में सब पहुँच गईं। प्यारी वीणावारी की बड़ी खातिरदारी कर के समीप बैठा कर आनंदित हैं।*)

★ *वीणावारी व०—*

दोहा

ऐ राधे मेरी सुनो । हो तुम अति परवीन ॥
ठीक धर्यो खोयो नहीं । यह जीवन मम वीन ॥
नारद शारद को सदा । या बाजे सो प्रीत ॥
तुम तो समझो खेल यहि । या हौं जीवन मीत ॥

वार्ता:—(*वीन को देकर कहती है*) ऐ प्रिये यह वीणा मेरी भली प्रकार धरियो । यह खेल नहीं है यासो मेरो स्नेह है । देखो—नारद और शारद ये दूनों वीणा के प्रेमी हैं । याही से तोकूं हमारी वीन पै चौकसी रखनी चाहिये । प्यारी वीणा मेरी जीवनी है ।

प्रि० व०—

दोहा

तोकूँ तेरी वीणा को । राखूँ प्रीति बढ़ाय ॥
सजनी जनि संदेह करु । तूँ अति मोहिं सोहाय ॥

र्ता:—अरी सजनी—(*वीणा को हाँथ में लेकर*) तूँ निर्भय रह । यह वीणा तेरे युक्त मुझे हूँ प्यारी है ।

★ समाजी व०—

शैरी

दोऊ रसमसी कै जुटीं एक साथ ॥
सखी घेरि बैठी प्रिया जू के साथ ॥
कही प्यारी आली बजा वीण गाव ॥
मेरो मन है तोपै लग्यो मोद छाव ॥

वार्ताः—प्यारी गोपियों के मंडल युक्त बैठी वीणाधारी से प्रेम में उलझी हुई बातें करती हैं। (*अरी सजनी—नेक गानो वीण बजा कर गा। मेरो मन सुनिवे को उमग्यो है।*)

★ *समाजी व०—*

शैरी

उठा वीण गाई छबीली जबै। सखी सर्व मोही भली स्वर फबै।
महा माधुरी तान तिरछी निगा। सलोनी के स्वर पै प्रिया मन भिगा।
चला भौं मजे में ललित गान को। चपल भावनी गारही तान को।
प्रिया और सखियाँ कहैं है गुनी। कहीं ऐसी गायक न देखी सुनी।

वार्ताः—अच्छो प्रिया जो (*कह कर वीणा उठा कर वीणाधारी गाती है*) प्रिया और सखी मोहित हो रही हैं। (*प्रियाजी*) देखो तो—या सलोनी तान हूँ सलोनी हैं। (*सखियाँ*) हाँ प्रिया जी—ऐसी गाने वाली अनों न कान से सुनी और न देखी है।

★ *वीणावारी व०—*

गाना

आवो जु गानो व तानो सुनाऊँ वीण बजाऊँ जियरो लुभाऊँ ॥

तान

तूँम तूँम तूँम दिर नादिर ताँम तूँम ॥ दीम् दीम् दीम् झूँम् छूँम् दीम् तूम् ॥
ताना नाना नन् तरता धीन् धीन् तूँम् ॥ रिझाऊँ ॥१॥
आवो जु गानों व तानो सुनाऊँ वीण बजाऊँ जियरो लुभाऊँ ॥

वार्ता:—वीणावारी तिरछी निगाहें चला चला कर और कहीं २ भौं मटका कर मुसकुरा कर गा रही है । प्रिया जी और सखियाँ । वाह री वाह । सजनी—मन को तो बावरो सो कर दियो । तेरी तानों को हजार बार धन्य है ।

प्रिया व०—

दोहा

रीझि लाड़िली कहत यूँ । अरी साँवरी नार ॥
बरसाने में बास कर । साँचो प्रेम विचार ॥
असन वसन सतकार अति । नयो करूँ नित जान ॥
नगर वास कीजो मुदित । हेत मोर पहिचान ॥

वार्ताः—(वीणावारी से श्री प्यारी जी कहती हैं) ऐ साँवरी सजनी अव तूँ बरसाने में हीं वसो और कहीं न जावो मेरो प्रेम तुम से लग गयो है। मोकूँ तेरे बिना दुख होय गो । मैं तेरो सतकारो रोज नयो करूँगी। असन बसन काहूँ की कमी ना होने पावेगी।

★ समाजी व०—

दोहा

वीणा वारी सुनि हँसी। कही सुनो मो बात॥
संगति गुन एकी लखूँ। मम तुम पुर गृह नात॥

★ वीणावारी व०—

वार्ताः—ऐ प्यारी—जो तूँ मोपै प्रेम कियो है तो मेरो हू प्रेम तोपै है। बरसानो, घर, तूँ, अली सभी जो तेरी हैं, वो ही मेरी हैं। हम तो एकी समझ हैं। क्योंकि प्रेम में मेरो तेरो नहीं है।

★ समाजी और वीणावारी व०—

दोहा

आवत जात रहूँ सदा। याते जाव न ठीक॥
मेरो गान सुन्यो प्रिय। गाव तुहूँ यह नीक॥

धरि वीणा बोली सुनी। कही मोरि की नाहिं ॥
अब मैं गाऊँगी नहीं। गान सुनन मन माहिं ॥
बारी बारी गाइयो। यह सुनि प्रिया सुजान ॥
विहँसि मुदित कर वीन लै। सखिन संग किय गान ॥

वार्ता:—ऐ प्यारी मैं सदा आती जाती रहूंगी तू चिन्ता न कर। मेरो गानो सुन्यो है अब मैं हूं तेरो गानो सुनूँगी। बारी बारी गानो होनो चहो (प्यारी जी) अच्छो। *वीणा उठा कर लेती हैं, सखियाँ अनेकों प्रकार के बाजन बजाने को जुट जाती हैं।*

★ *सम्राज्ञी व०—*

दोहा

बाजन अमित प्रकार के। सखियन के कर भ्राज ॥
वीणा बजाई राधिके। उमगी सकल समाज ॥

वार्ता:—सखियाँ मुरचंग, मंजीर, मृदंग, इत्यादि बाजे बजाती हैं और श्री प्यारी जी वीणा बजा कर गाती हैं।

[स]म्राज्ञी और प्रिया व०—

गाना-ठुमरी

प्यारी बीन है बजाई ॥ स्वर ताल को मिलाई ॥१॥
साँवरी सजनी तुरत उठि ॥ नाचिवे उम गाई ॥२॥

मुरली भाव धरे कर पै दृग ॥ बढ़ गई चपलाई ॥३॥
त्रित्य नंद कुमार सरीखी ॥ राधे मुख रट लाई ॥४॥
प्रेम की गति अट पटी छवि ॥ कीर्ति के मन भाई ॥५॥

वार्ता:—प्यारी वीए बजा रही हैं, मधुर स्वर गा भी रही हैं।सखियाँ वाज बजा कर वाह वाह कह रही हैं। साँवरी सहेली स्थिर नहीं है, प्रेम में तड़फड़ा कर खड़ी हो जाती है। और श्री नंद कुमार ही की भाँति हाँथ को उठा कर मुरली वजाने का भाव बताती है। आखें भौं मटका कर नाचने लगती है। होठ राधे राधे कहने से हिल रहे हैं।

★ समाजी व०—

दोहा

गल वाहीं देवन चही । राधा प्यारी ओर ॥
झुकी सम्हलि प्यारी गई । ललिता तकि ता ओर ॥

वार्ता:—साँवरी सजनी, गान स्वर में मुग्ध है नाचती है और ... के गले अपनी बाहें डालने को झुकी देख कर प्यारी सम्हल ... हैं। गाना बजाना बंद हो जाता है। ललिता वीणाधारी को सन्देह ... देखती है।

★ *समाजी व ललिता व०—*

दोहा

अरी प्रिया यह बाल नहिं। कान लगी कहि हाय ॥
परखि जोहि देखूँ अभी। भली न मोहिं देखाय ॥
सर्व सखी लखिवे लगी। वार वार दृग लाय ॥
कियो भंग गानो मधुर। कौन भौन गयो आय ॥
ललित किशोरी लखि रही। नख शिख दृग अटकाय ॥
कही फेरि ऐ साँवरी। मान पाय इतराय ॥
कह कौतुक यह काह री। राज महल में आय ॥
बोल साँच हो कौन तूँ। मोहिं अनमिष दरसाय ॥
कै स्यानी कै बावरी। अपनो रूप बताव ॥
प्रीति तोरि वो भल नहीं। भेद मोहिं समझाय ॥

वार्ता—(*प्यारी जी के कान में ललिता कहती है*) ऐ स्वामिन यह सहेली नहीं है। याको भली भाँति परखूँगी। सब सखियों के दृग साँवरी सखी पै लग रहे हैं। नख शिख से ललिता आदि सखियाँ ध्यानपूर्वक देखती हैं। देख कर और शिर हिला कर सभी धीमे स्वर कहती हैं। अरी वाला नहीं है, इन्द्रजाला है। (*ललिता साँवरी सजनी से पूँछती है*) अरी मान पायो हो ताही ते इतराती है। हमारी प्यारी पै झुकी जाती है। ये क्या ठीक है ? साँची बोलो तुम कौन हो ? ऐ स्यानी तू हीं बुद्धि वारी

है। बावरी तो नहीं हो गई ? आखिर क्या है जो तूँ मनमानी इठला रही है ? शीघ्र बता दीजो। यह राज महल है। यहाँ पर ऐसी अबलावों को आनो अच्छो नहीं है। ताते साफ कह कौन हो। प्रीति हूँ न टूटै, और सखी कहीं भेद हूँ न फूटै (तीसरी) तूँ भी नाहिं रूठै। (चौथी) यही तो होनो उचित है।

प्रिया व०—

शैरी

यह साँवरी सखी मेरे प्रियतम को कहीं देखी ॥
ता हेत छटा उनकी कीन्हीं ये मैने लेखी ॥

वार्ता:—प्रिया जी कहती हैं। (अरी ललिते—या को दुर्वचनों से कछु अनुचित ना कर दीजो। मैं तो यही कहती हूं कि या साँवरी ने कहीं मेरे प्राण जीवन की नृत्य देखी है। ताही ते वाही की उपमा दे दे कर मुझे रिझवारी से अठिला रही है। याते समझ बूझ कर बातें करो, जो प्रीति ना घटै।

★ *समानी और प्रियंवदा व०—*

शैरी

बोलीं प्रियंवदा कहो सजनी हो की नहीं ॥
साँची बतावो सादर पहुँचा दूँ वेग हीं ॥

वार्ता:—स्वामिन—आपकी आज्ञानुसार हीं प्रीति रख कर पूँछूगी। कछु वेजा न होवेगा। (*प्रियवंदा पूछती है*) ऐ साँवरी सजनी—जो हम सब सखियाँ पूँछ रही हैं वह बता क्यों नहीं देती हो। यदि कछु गड़बड़ी हो तो भी हम सब तुम्हें सादर ही राज महल के बाहर पहुँचा आवेंगी। किसी प्रकार की चिंता न कर के कहो कौन हो? प्रिया जी तुम्हारी तकसीर माफ कर देंगी। डरो ना। बता दो। (*चित्रा सखी*) अरी चुप क्यों हो? अपनी प्यारी वीण लो, और साँच बोलो, अपनी राह लो। हो चुक्यो झमेलो तेरो, खिझावो ना।

★ *चन्द्रानना और समाजी व०—*

शैरी

हौले कही चन्द्रानने प्रिय यह बिहारी लाल॥
चीन्हूँ मैं नीके याकी आँखैं चपल विशाल॥

वार्ता:—(*चन्द्रानना हौले कहती है*) प्यारी जी—मैं खूब पहिचान गई। यह नंद कुमार हैं। या में नेक संदेह नहीं है।

प्रिया व०—

शैरी

स्यानी सखी पहिचान में कहिं चूक ना परै॥
अति प्रीति वीणा वारी दिल में न दुख भरै॥

वार्ताः—ऐ सखी—पहिचान ऐसी ना कीजो कि वीणावारी का दिल दुखी हो।
(सखी) नहीं नहीं स्वामिन, मैं अच्छे उपावों से परखूँगी।

★ समाजी व०—

शैरी

कंचन कटोरी इत्र भरी लाई विसाखा ॥
अब तो खुलैगी बात ठीक है यही ताखा ॥

वार्ताः—विशाखा सखी शीघ्र जाकर सोने की कटोरी में इत्र ले आती है। ललिता कटोरी हाँथ में लेकर कहती है। यही तखन ठीक होगी।

★ समाजी व ललिता व०—

शैरी

मैं हीं अली व्यवहार करूँ मोद भरूँगी ॥
यह चोलियों में सर्व हीं के इत्र मलूँगी ॥
चन्द्रानना चम्पक लता चित्रा विसाखा बाल ॥
चोलीन इत्र धार कै व्यवहार परिख पाल ॥

वार्ताः—ललिता सर्व सखियों के चोली में इत्र लगाती है। चन्द्रानना, चम्पकलता चित्रा, विशाखा आदि गोपियों के इत्र लगा कर वीणावारी के चोली इत्र लगाने जाती है और कर स्पर्श करते हीं, भंडोफोड़ होता है।

★ *समाजी व ललिता व०—*

शैरी

ऐ वीणावारी चोली में है इत्र लगानो ॥
कर पर्श भंडो फूट्यो यह मर्द सयानो ॥
ऐ प्यारी यह तो नंद लाल नाहिं वाल है ॥
कपटी सलोने साँवरे की चाल वाल है ॥

वार्ताः—(*ललिता कहती है*) ऐ प्रिया जी—यह सखी वखी नहीं है। यह तो सलोनो गिरधारी नंद कुमार ही हैं। अरी वाहरी वीणावारी सजनी। तूँ तो गहरो रंग मचायो है। (*सर्व सखियाँ और प्यारी जी हँसती हैं*) (*चित्रा कहती है*) यही मनभावनी को नीको सत्कारो करनो चाहिये। याने सब को हीं तो छका डार्यो है। (*सब सखी*) वीर—जो प्रिया जी की आज्ञा होगी वही दंड इन्हें दिया जावेगा। (*चम्पकलता*) भारी चालबाजी हुई हम कोई नेक हूँ नहीं जान्यों। (*हँसती हैं*) (*चन्द्रावली*) अरी वीरो— याके चरणों को मजबूती से पकड़ रक्खो। याही दंड ठीक है ना ? (*सब सखियाँ*) हाँ हाँ हाँ, यही, यही तो ठीक है। (*प्यारी जी मुसकुराती हैं*)

माजी व०—

शैरी

हँसि श्री विहारी लाल प्यारी अंक में भरी ॥
थी भूल मेरी ऐ सखी पहिचान जो करी ॥

वार्ता:—(नंद किशोर कहते हैं) ऐ सखियो—मेरी भूल से तुमने पहिचान्यो है। नहीं तो जाने हीं न पाती।

★ सखी और समाजी व०—

शैरी

मुसक्याय प्यारी प्यारे आनंद में भरे ॥
सखियाँ कहैं नट राज नैन नेह से भरे ॥
अद्भुत रहस्य रोज नये प्रेम नेम के ॥
प्रीतम प्रिया के हेत की हम सबन छेम के ॥
सब हँस रहीं सहेलियाँ प्यारी कही री वाम ॥
यह तो न नेक ठीक है फिर हो गये जो श्याम ॥

वार्ता:—प्यारी प्यारे मुसक्याने हैं। (सखियाँ कहती हैं) अरी वीरो—देखो तो, यां नटराज के नैनों में सनेह भर्‌यो है। (चन्द्रावलि) हाँ वीर—याकी नि नवीन लीलायें जन रंजनी हैं प्यारी के हित की हैं। (सब सखियाँ अरी ब्रम्हाण्ड के क्षेमक याके चरित्र हैं। (चंपकलता) सो तो साँचोइ है या जुगुल जोड़ी त्रिभुवन की कल्याणी है। (सब सखियाँ) ठीक है बीर ठीक (सब चुप हो जाती हैं) (प्यारी कहती हैं) ऐ सखियो—यह श्य जी हो गये। हमें तो साँवरी सजनी भावै है। (सब सखियाँ हँसती (और कहती हैं) सखी—प्यारी जी को साँवरी सजनी भावै है। (चन्द्रावलि प्यारी हीं के पास तो हैं, भावती कर लीजो। (सब सखी आनंद में डूबी हैं। कहती हैं) वाह, वाह, श्याम जी।

शैरी

कह कृष्ण कन्हइया नहीं तो चैन हमें है ॥
या हेत आते जाते जो स्नेह जमें है ॥

वार्ताः—प्यारी—तेरे स्नेह बस मुझे आनो ही पड़तो है। यह प्रेम ही ऐसो है सखी जाके बिना चैन हीं नहीं आती। (हाथों से कपोलों को स्पर्श कर) ऐसी ये प्यारी है।

सीनः—पहिला। **ड्राप तीसरा** स्थानः—श्री युगुल किशोर का दर्बार।

...चन—

शैरी

...जनी युगुल किशोर की अब आरती करो ॥
सुख सेज में पौढ़ाय गौन भौन को करो ॥

...री सखियो, अब आरती करो। युगुल दर्श कर के, सुख सेज पै बैठा कर हम सबहीं अपने अपने भौन कूँ चलैं। (सर्व सखियाँ) अच्छो बीर।

...ी होती है, सखियाँ गान करती हैं)

★ आरती—

गाना

भावै सलोनो छबीलो बृजराज युगुल आरती उतार ।।
दर्श सुखमा आगार यही साँचो हेत कार युगुल आरती उतार ।।
वृन्दावन धाम स्वामी श्यामा श्री श्याम ।।
वार बार हर्षि आली तन मन धन वार युगुल आरती उतार ।।१।।
प्रेम की गली वृषभान की लली, धारि धारि चरन शीश
जग्त भीति टार युगुल आरती उतार ।।२।।
नित नव विहार स्वजन सुगति देन वार ।।
जैति जै मनहार अली कृष्ण कीर्ति यार युगुल आरती उतार ।।३।।

वार्ताः—(सखियाँ आर्ती वार कर प्रणाम करती हैं। जै जै कह कर जाती हैं। श्री जी शयनागार में जाते हैं)

★ *विनय—*

दोहा

दीनानाथ शरण पड़ी । कीर्तिं कष्ट निरवार ।।
क्षमा दान अपराध कै । करुण कटाक्ष निहार ।।

—इति—

।श्री कीर्ति किरण समाप्त ।।

।। श्रीमन् दीनानाथार्पण मस्तु शुभंभूयात ।।

लेखिका

कीर्ति कुमारी रीवाँ राज । मु० किला रीवाँ ।

आश्विन कृष्ण पक्ष ११ रविवार सं० २००६